'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 1
ISSN: 2348-7143 (Online)
Jan-March - 2014

# हिंदी को विश्व भाषा बनने में इंटरनेट का योगदान

**डॉ. सुनील कुलकर्णी**
प्रपाठक, हिन्दी,
भाषा अभ्यास प्रशाळा एवं संशोधन केंद्र
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

**श्री. गजानन वानखेडे**
संशोधक तथा जे. आर. एफ. छात्र
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव
भ्रमणध्वनी - ०९९२१२६४६५४

**इंटरनेट को हिंदी भाषा में अंतरजाल एवं महाजाल कहा जाता है। यह विश्व का सबसे नवीन एवं लोकप्रिय माध्यम है। इंटरनेट पर हिंदी की उपलब्धता 'गागर में सागर भरने' जैसा है। हिंदी भाषा से जुड़ी हर एक जानकारी इंटरनेट पर मिल जाती है। इंटरनेट में जनसंचार माध्यमों के सभी गुण समाहित है। अंतरजाल पर हिंदी दुनिया निरंतर समुद्ध होती जा रही है। दुनिया की कोई भी जानकारी आप इंटरनेट के माध्यम से पलक झपकते पा सकते है। यही इंटरनेट की सबसे बड़ी विशेषता है।**

***"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल***
***बिनु निज भाषा-जान के, मिटत न हिय को सूल***
***अग्रेंजी पढ़ि के जदपि, सब गुण होत प्रवीन***
***पै निज भाषा जान बिन रहत हीन के हीन"***

इसका अर्थ है हर एक देश की अपनी भाषा ऐतिहासिक विरासतों एवं संस्कृति को अभिव्यक्त करती है। भारत में हिंदी भाषा को महत्त्वपूर्ण स्थान है। अक्सर हिंदी भाषा पर यह आरोप लगाया जा रहा है कि,वह संगणक की दृष्टि से अंग्रेजी की तुलना में उतनी कारगर नहीं है,क्योंकि 'मुख्य प्रोग्रामिंग लॅग्वेंज अग्रेंजी' में होने के कारण हिंदी का विकास धीमी गति से हो रहा है। परंतु हिंदी का विकास वेब पटलपर कही भी रुका नहीं है। उदा. हिंदीसमयडॉटकॉम :- म.गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समर्थित योजना में भारतेंदु युग से लेकर १९५० तक के कॉपी राइट मुक्त हिंदी साहित्य के एक लाख पृष्ठ उपलब्ध करवाए है। इसका उपयोग संयुक्त राज्य,अमेरिका, जर्मनी,नार्वे,डेनमार्क,पाकिस्तान,कतार,साऊदी अरब,संयुक्त अरब अमीरात,कॅनडा,ऑस्ट्रेलिया,ईरान,पोर्तुगाल,स्पेन आदि देशों के हिंदी के पाठक वर्ग को हो रहा है। इस योजना का उद्देश्य हिंदी साहित्य के पाठक एवं दुनिया भर में फैले साहित्य प्रेमियों तक हिंदी साहित्य को उपलब्ध करवाना है। इसी तरह म.गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के सभी शोध प्रबंध ऑनलाइन उपलब्ध है। इन प्रबंधो के माध्यम से हिंदी के नव अनुसंधाता छात्रों को दिशा मिलती है। सी-डैक जैसी संस्था ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए विवध सॉफ्टवेअर विकसित किए है। उसमें युनिकोड यह मुद्राक्षर बहुत-ही कारगल एवं महत्वपूर्ण साबित हुआ है। सी-डैक ने भारतीय भाषाओं के प्रौदयोगिक विकास में महत्वपूर्ण कार्य किया है। सी-डैक ने लीला जैसा प्रोग्राम बनाया है जो हिंदी सिखनेवालों के लिए भाषा शिक्षक का काम करता है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय http:hindinideshalaya.nic.in द्वारा ऑनलाईन हिंदी परीक्षा पध्दति के माध्यम से घर बैठकर हिंदी शिक्षा में सफलता पाई जा सकती है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग,www.rajbhasha.gov.in भी इंटरनेट पर हिंदी के प्रचार

प्रसार के लिए सक्रिय है। राजभाषा विभाग की वेबसाईड पर संविधान के प्रावधान,अधिनियम,नियम,वर्षिक कार्यक्रम उसी प्रकार देवनागरी में यांत्रिक और इलैक्ट्रानिक सुविधाएं एवं नव-नवीन हिंदी सॉफ्टवेअर निर्माण किए है। लग-भग सभी केंद्र सरकार की वेब साईड हिंदी भाषा में विकसित की गयी है। बैंक,डाक,रेल,सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय,एल.आय.सी, इग्नू विश्वविद्यालय आदि विविध कार्यालय हिंदी के विकास के लिए सक्रिय भूमिका अदा कर रहे है। एल.आय.सी ने हिंदी वेबसाईट विकसित की है। राष्ट्रीयकृत बैंको की वेबसाईटे हिंदी में इंटरनेट पर उपलब्ध है। रेल्वे की अधिकतर वेबसाइट हिंदी भाषा में है। रेल्वे ने ऑनलाईन टिकट के सॉफ्टवेयर हिंदी भाषा में विकसित किए है। उसी प्रकार विश्व बैंक ने भी अपनी साइटे अंग्रेजी के अलावा हिंदी में तैयार की है। इसका अर्थ हिंदी को अंर्तराष्ट्रीय भाषा बनाने के लिए इंटरनेट का योगदान महत्वपूर्ण है।

इंटरनेट को हिंदी भाषा में अंतरजाल एवं महाजाल कहा जाता है। यह विश्व का सबसे नवीन एवं लोकप्रिय माध्यम है। इंटरनेट पर हिंदी की उपलब्धता 'गागर में सागर भरने' जैसा है। हिंदी भाषा से जुडी हर एक जानकारी इंटरनेट पर मिल जाती है। इंटरनेट में जनसंचार माध्यमों के सभी गुण समाहित है। अंतरजाल पर हिंदी दुनिया निरंतर समुद्ध होती जा रही है। दुनिया की कोई भी जानकारी आप इंटरनेट के माध्यम से पलक झपकते पा सकते है। यही इंटरनेट की सबसे बड़ी विशेषता है। आधुनिक काल में विभिन्न प्रयोजनों के लिए हिंदी का बड़ा व्यापक प्रयोग हो रहा है। यही कारण है कि उसे व्यापक स्वीकृति मिली है। आज वह अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्टीय संदर्भों में प्रयुक्त हो रही है। उसके अनेक रुप विकसित हो गए है जिनमें मानक-भाषा,राष्ट्र भाषा,राज भाषा,संघ भाषा,संपर्क-भाषा,सर्जनात्मक भाषा,संचार-भाषा जैसे नाम अत्यन्त महत्व के है। इस संदर्भ में गुगल इंडिया के प्रमुख विजय गोयल का हिंदी के बढ़ते वर्चस्व के बारे में मानना है कि "भारत की सिर्फ सात प्रतिशत जनसंख्या ही अंग्रेजी बोलती है, बाकी लोग हिन्दी और अन्य क्षेत्रिय भाषाएँ बोलते हैं। हमारी कोशिश है कि,किसी भी तरह हिन्दी की ऑफलाइन सामग्री को ऑनलाइन लाया जाए।" आज की स्थिति में कुछ जगह पर हिंदी का विकास नहीं हुआ है किंतु इसके लिए हिंदी के अनुसंधाताओं को प्रयत्न करना चाहिए क्योंकि इंटरनेट पर स्वयं कुछ नहीं आता बल्कि संपादन करना पडता है। आप जो भी सर्च करना चाहते हो गुगल के संर्च इंजिन में हिन्दी अथवा अंग्रेजी में टाईप करें लिंक की ढेर सारी सूची आपको मिल जाएगी। कम-से-कम खर्च में हिंदी के सुधि पाठकों तक पहुँचाने का कार्य आज इंटरनेट के माध्यम से हो रहा है। वैसे ही ऑरकुट, गुगल, जी मेल, याहू, फैक्स, ई-मेल, फेसबुक, वॉइस मेल आदि इंटरनेट के ही विविध अंग है। जो प्रमुख रूप से हिंदी को प्रसारित करने का कार्य करते हैं। आज इंटरनेट के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार जोर-शोर से हो रहा है। कबीर के दोहे, तुलसीदास के पद, प्रेमचंद, अज्ञेय, मैथिलिशरण गुप्त, महादेवी वर्मा आदि अनेक प्रतित्तेयश हिंदी लेखकों का साहित्य इंटरनेट पर उपलब्ध है। हिंदी को विश्वभाषा बनाने के लिए इंटरनेट ने किस तरह अपनी भूमिका अदा कर रहा है उस पर हम प्रस्तुत शोध आलेख में आगे प्रकाश डाल रहे है। वर्तमान समय में इंटरनेट पर जितने भी साधन उपलब्ध है लगभग सभी में हिंदी का प्रयोग बहुत

खुब हो रहा है। यह कानोसुनी नहीं आँखों देखी बात है। जिसकी अनुभूति आगे का शोध आलेख पढ़कर आपको होगी। हिंदी इंटरनेट के माध्यम से जैसे विश्व्व भाषा का स्थान एवं मान सम्मान पा रही है इस संदर्भ में अलग-अलग विव्दानो के मंतव्यों पर संक्षेप में आगे प्रकाश डालकर इंटरनेट को भिन्न-भिन्न साधनों में हिंदी के बढ़ते प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

**इंटरनेट की परिभाषाः-**

"An Internet is a private computer network based on the standards of Internet" [१]

"अंतर्संबध्द नेटवर्कस की श्रृंखला जो विश्व के लाखो संगणको द्वारा आवेष्टित किए हुए डाटा का संचार करने की अनुमति देता है।"

"एक वैश्विक संचार नेटवर्क जो विश्व के लाखों संगणकों को कनेक्ट करने एवं जानकारी का विनिमय करने की अनुमति देता है।"

"संगणक नेटवर्क की एक विश्वव्यापी प्रणाली, नेटवर्कस का एक नेटवर्क जिसमें एक संगणक के उपयोगकर्ता किसी दूसरे संगणक से जानकारी प्राप्त कर सकते है।"[२]

संक्षिप्त में इंटरनेट परिभाषा में कहा जा सकता है ,"ई-मेल का सार्वत्रीकरण, कॉपी पेस्ट का करिश्मा इससे ज्ञान का भूमण्डलीकरण होकर इसके माध्यम विश्व में एक-दूसरे को जोड़ने का माध्यम है।" वर्ल्ड वाइल्ड वेब यह इंटरनेट का विकसीत रुप है। डॉ.सुनीलकुमार लवटे अपनी किताब " हिंदी वेब साहित्य " में हिंदी को विश्व भाषा बनने में इंटरनेट की भूमिका के बारे में लिखते है, "हिंदी संगणक,इंटरनेट से दुनिया की बहु प्रयोगिक एवं ज्ञानसमुध्द भाषा बनी। संगणक, इंटरनेट से हिंदी का न सिर्फ भारतीय अपितु विश्वभाषाओं से संवाद, आदान-प्रदान तेज हुआ है, विकास का क्षितिज खुला है। कमी है, प्रयोगकर्ताओं की। लेकिन जैसे-जैसे हिंदी के जालस्थल बढेंगे,जालस्थलों पर हिंदी सामुग्री का विस्तार होगा वैसे हिंदी का 'ई-प्रयोग' बढ़ेगा। भविष्य में हिंदी भाषा और लिपि के आज के प्रायोगिक अवस्था का रुपांतरण अनुसंधान में होगा,तब सही मायने में हिंदी भाषा और लिपि का विकास होगा।"[३] इंटरनेट पर यूनिकोड,बरह,माइक्रोसॉफ्ट,गूगल,कॅफे हिंदी,प्रखर,लिपिकार,हिंदी रायटर जैसे ऑफलाइन संसाधन से हम हिंदी टंकन और लेखन कर सकते हैं। ऑनलाइन संसाधन की तरह विभिन्न भाषा और लिपि में परिवर्तन,अनुवाद आदि सुविधाएँ उपलब्ध है। वर्तमान समय के साथ हिंदी टंकन भी तत्पर और गतिशील बना है। अब मौखिक आदेश से टंकन संभव हुआ है। बोलने वाली बात हम सीधे टंकित कर सकते हैं। टंकित सामुग्री की पंक्तिबध्द रचना भी कर सकते हैं। उस सामुग्री में जोड़ना,घटाना,बढ़ाना आदि के साथ उसका संपादन,अनुवाद,लिप्यांतर ने भी इस साधन से संभव हुआ है। इनके साथ स्वचलित वर्तनी संशोधन ,स्वचलित रचना,स्वचलित शब्दपूर्ति, स्वचलित सारलेखन की सुविधाएँ भी आज वर्ड प्रोसेसिंग संसाधनों में उपलब्ध है। मा.गांधी विश्वविद्यालय वर्धा ने 'हिंदी वर्तनी जाँचक' विकसित किया है जो काफी महत्वपूर्ण शोध कार्य माना जायेगा। जिससे आमतौर पर होने वाली हिंदी की व्याकरणिक गलतिओं में सुधार होगा।

अंतरजाल अनुसंधान कर्ताओं ने हिंदी के बढ़ते प्रभाव को स्वीकार करते हुऐ भारत सरकार के हर एक विभाग की वेब पटल हिंदी भाषा में करने का सराहनीय कार्य किया जा रहा है। इस कारण एल.आई.एल.ए. इन्होंने लर्न लैंग्वेजेस विद आर्टिफिशियल इण्टेलीजेंस जैस सॉफ्टवेअर विकसित किए हैं ताकि हिंदी में प्रसार की रफ्तार तेज हो सके। इंटरनेट की वजह से प्रेमचंद, हरिवंशराय बच्चन, गालिब को पढ़ने के लिए किसी पाठक को उस पुस्तक को खोजकर ढूँढकर, खरीदकर नहीं पढ़ना होगा। अब पाठक इंटरनेट पर निरन्तर www.nirarar.org के जरिए मुफ्त में विश्व के किसी भी कौने में पढ़ सकते है। इंटनेट पर उपब्लध हिंदी साहित्य के बारे मनीषा कुलश्रेष्ठ लिखती है, "मैं समझती थी साहित्य एक खुला,ढेर-सी खिडकियों और रोशनदानों वाला जगर-मगर हॉल है। साहित्य अपनी असंख्य आँखें खुली रखता है और अपनी संवेदी इन्द्रियाँ सज़ग रखता है। संसार की हर करवट को तह तक महसूस करने का माददा रखता है। संसार के समस्त ज्ञान का सत्व रिस-रिस "[४] इंटनेट जगत में हिंदी की क्या स्थिति यह जानते हुऐ हम उस विकास क्रम पर नजर डालेगें। अग्रेंजी भाषा की तरह हिंदी में भी वर्तनी जाँचक सॉफ्टवेअर उपलब्ध है। वह ऑनलाईन आफलाईन दोनों रूपों में मौजूद है। हिंदी में हिंदी राईट, अॅसपेल, ओरंगो, फायफॉक्स आदि वर्तनी जाँचक उपलब्ध है।

मुद्राक्षर (Fonts) - यूनिकोड, कृतिदेव, आय.एस.एम, श्रीलिपि, शिवाजी, अंकुर, ए.पी.एस आदि है। मुद्राक्षर सशुल्क एवं युनिकोड सी-डैक द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए मुफ्त उपलब्ध है। जिसकी बाजार में किंमत लगभग पाँच हजार तक है। मुद्राक्षर परिवर्तन -एक फॉंट दूसरे फॉंट परिवर्तन करने के लिए इस संसाधन की आवश्यकता होती है। जिसमें अमर,चाण्क्य,सुरेख,कृतिदेव,शिवाजी,योगेश आदि परिवर्तक उपलब्ध है। यह सशुल्क तथा मुफ्त उपलब्ध है। इसी तरह से हिंदी में लिपि परिवर्तक भी उपलब्ध है जो हिंदी से मराठी,पंजबी,उर्दू आदि विविध भाषाओं में लिपि परिवर्तन करने में मदत करते है। उसी तरह यह परिवर्तक विदेशी भाषा के लिपि परिवर्तन मदतगार साबित होते हैं। इसमें गूगल का लिपि परिवर्तक ज्यादा उपयोग में लाया जाता है। हिंदी शब्दकोश-इंटरनेट पर ऑन लाईन, ऑफलाईन दोनों तरह से मौजूद है। जिनमें यूनिवर्सल वर्ड, शब्दकॉम.कॉम, हिंदी विकीपीडिया,डिक्शनरी.कॉम आदि इंटरनेट पर उपलब्ध है। हिंदी भाषा में अनुवाद करने के लिए गूगल,बेबीलोन आदि सॉफ्टवेअर से एक भाषा की सामुग्री दूसरी भाषा में अनूदित होकर मिलती है। यह अनुवाद यांत्रिक होता है। आशय समझता है किंतु यह कभी-कभी विचित्र हो जाता है। अनुवादित सामुग्री पूरी तरह से व्याकरणिक तौर पर शुध्द नहीं होती है। किंतु इसकी मदत से हम दूसरी भाषा आंशिक तौर पर अनुवाद कर सकते है।

**ऑनलाइन किताब :-**

अंतरजाल पर कई हिंदी की ऑनलाइन किताबें हैं जैसे प्रेमचंद का गोदान,कर्मभूमि,प्रेमाश्रम,सेवा सदन,गालिब की गज़ले आदि है।"राजेन्द्रकृष्ण चौधरी। कबीर पर इनकी साइट को एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने कबीर नेट पर उपलब्ध साइटों में बेहतरीन माना है। इसमें कबीर के दोहे और पद संग्रहीत किए है हिन्दी अंग्रेजी दोनों में जिसे देवनागरी

न आती हो लेकिन हिन्दी आती हो तो वो भी पढ़ सकता है।" [५] हिंदी की ऑनलाईन किताबों में लगभग ४०० से ५०० हिंदी कवि है और उनकी दो हजार से ज्यादा कविताओं का संग्रह हमे आज नेट पर मिलते हैं। विकीपीडिया के बारे में निजी वेल्स जो विकीपीडिया के संस्थापक है वे लिखते हैं की, "दुनिया के हर व्यक्ति के लिए उनकी खुद की भाषा में एक अनेक भाषाई स्वातन्त्र तथा जहाँ सम्भव हो सर्वोच्च गुणवत्ता वाला विश्वकोश बनाने तथा उपलब्ध करवाने की कोशिश है।" इंटरनेट पर हिंदी को समुद्ध करने के लिए विकीपीडिया का बहुत बड़ा योगदान है। विकीपीडिया पर सभी हिंदी के संत कवि,लेखक,समीक्षक,विविध प्रसिध्द रचनाएँ, हिंदी के नविनतम विधाओं का परिचय मिलता है।

अनूप सेठी अपने अंतरिक्ष डिपार्टमेंटल स्टोर इस लेख में लिखते हैं, "वेब दुनिया ही नहीं, दूसरे वेब ठिकाने भी साहित्य को जगह दे रहे हैं। यह अजीब विरोधाभास है। आम जीवन में साहित्य की जगह सिकुड गई है। पत्र-पत्रिकाओं से साहित्य गायब हो रहा है। लघु पत्रिकाओं के पाठक कम है। लेकिन इंटरनेट पर साहित्य विराजमान है। वह भी इफरात में।"[६]

**वेब पत्रिका :-**

आज ई-पत्रिकाओं के माध्यम से विदेश में भी हिंदी पत्रिकाएँ सहज उपलब्ध है। इस तरह इंटरनेट हिंदी को विस्तृत रूप से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करता है। वेब पत्रिकाओं का महत्व बताते हुए सुनीलकुमार लवाटे लिखते है,"रचनाकार,अनुभूति,गर्भनाल,सृजनगाथा जैसी वेबसाइडस जो कार्य हिंदी की रोटी सेंकने वाले हर शख्स,संस्था,समाचार-पत्र,पत्रिका,टी.वी.चैनल्स को करना होगा। हिंदी भाषिकों की वैश्विक जनसंख्या दुनिया में तीसरी है तो क्या हमें वेब साहित्य में भी तीसरे पायदान पर नहीं होना चाहिए? क्यों जपान,जर्मनी,चेक भाषाएँ हिंदी में वेबसाइटस चलाए? आने वाले दिनों में हमें अपनी उपयोजित प्रतिबध्दता सिध्द करनी होगी,तभी हम हिंदी को विश्व भाषा बना पाएँगे।" ७ संस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षिक आदि पत्रिकाओं में अक्षर शिल्पी, वागर्थ, सम्मलेन समाचार, कृति और आकार दिव्यालोक, सृजन पथ, सृजन परिप्रेक्ष्य, वसुधा, समयांतर, अभिव्यक्ति,सामान्यजन, संदेश, पुस्तक वार्ता, रंगायन, अभिनव, युद्धरत आम आदमी, प्रसंगवश, धरती, परिचय, समकालीन साहित्य समाचार, आकार, सनद, नव निकष, साक्षात्कार, हंस, समीक्षा, अविधा, प्रगतिशील वसुधा, दलित साहित्य अंचल भारती, मनस्वी, प्रज्ञा, अनुभूति, हंस, ज्ञानोदय आदि पत्रिकाएँ ऑनलाइन है। न्यूजीलैंड से निकलनेवाली भारत दर्शन पत्रिका इंटरनेट की पहली पत्रिका होने का श्रेय लेती है। हिंदी की पत्रिकाएं एवं समाचार पत्र जो उपलब्ध है। उनकी वेबसाइट पत्ते दे रहे हैं

a. http://www.bharatdarsshan.co.nzestonies .eindex.html
b. http://www.indleentemmetindex.qsp
c. http://www.kalayan.org
d. http://www.lalayanputrikue.index.html
e. http://www.jagran.com
f. http://www.prabhasakshi.com
g. http://www.mayapunimagazine.com

h. http://www.mp.nic.inepanchayikae
i. http://www.hindi.indiatoday.com
j. http://www.rajasthanpatring.com
k. http://www.prabhatkhabar.com
l. http://www.hindimilap.com
m.http://www.navabharat.nete
n. http://www.bhaskar.com
o. http://www.tadabhv.com

आदि वेबसाईडो पर आप मुक्त हिंदी साहित्यिक पत्रिकाएँ प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी नेस्ट एक भरी पूरी साहित्यिक पत्रिका है। इसमें कहानी, कविता, कैशोर्य, चित्रलेख, दृष्टिकोन, नृत्य, निबंध, देस-परदेस, परिवार, बच्चों की दुनिया, भक्तिकाल, रसोई, लेखक, व्यक्तित्व, व्यंग, विविधा, संस्मरण, सृजन और साहित्य कोश नाम के स्तंभ है। इंटरनेट पर कितना हिंदी साहित्य उपलब्ध है इस बारे में मनीषा कुलश्रेष्ठ लिखती है। "गूगल तथा अन्य लोकप्रिय सर्च इंजनो पर हिन्दी में खोज के दौरान विकीपीडिया हिन्दी के संदर्भ व लेख ही मुख्य तथा परिणामों में जगह पाते है। अगर यह घड़ा बहुत बड़ा है और अभी बहुत खाली भी है। इसमें बूँद-बूँद सामग्री भर रही है। हम चाहें तो इसमें अपना सहयोग दे सकते हैं। हिन्दी में लगभर हर विषय पर विकीपीडिया पर जानकारी तथा सन्दर्भ लेखों की माँग है। इस माँग को हम वे सभी लोग पूरा कर सकते हैं जो हिन्दी कम्प्युटिंग में सहज रूप से काम पता है। विकीपीडिया हिंदी नयी जानकारियों के लिए अपने द्वार खोल रखती है। ऑनलाईन जाकर विकीपीडिया के अपने विषय पेज पर जाकर उसमें Edit क्लिक करके हिंदी में भी योगदान कर सकते हैं।"८ वेब पत्रिका की विशेष यह कि बिना चंदा दिए आप समकालीन साहित्य से परिचित हो सकते है। वेब पत्रिका संपादक की दृष्टि से कम खर्च में पूरी दुनिया के पाठको तक अपनी पत्रिका पहुँचाते हैं। अधिकतर वेब पत्रिकाएँ पी.डी.एफ होती उन्हें पाठक मुफ्त में डाउन लोड भी कर सकते है।

**समाचार पत्र :-**

इंडिया टुडे, भास्कर, जागरण,नवभारत टाइम्स, स्वतंत्र भारत, नई दुनिया, अमर उजाला, आज, जनसत्ता, तहलका, दि पब्लिक एजेंडा, लोकायन, दि संडे, जनपक्ष आदि समाचार पत्र हिंदी में इंटरनेट पर up to date है। इंटरनेट पर ऑन लाईन उपलब्ध हिंदी समाचार पत्रों की वेबसाईट के पत्ते इस प्रकार है -

a. http://www.lokmat.com
b. http://www.amarujala.orge
c. http://www.bhaskar.com
d. http://www.navabharat.nete
e. http://www.samacharbureau.com
f. http://www.navbharatimes.com

आदि ऑनलाईन है। ज्यादतर हिंदी समचारपत्रो के ई-संस्करण निकाले जाते है। ऑन लाईन समाचार पत्रो के माध्यम से हम ताजा समाचार से तो लाभान्वित होते ही है एवं पूर्व प्रकाशित अंक भी हमे मिलते है। समाचार पत्रो संपादकीय,स्तंभ,साक्षात्कार,भविष्य,क्रिकेट,मनोरंजन आदि विविध खबरें ऑन लाईन समाचार पत्रो से मिलती है।

**हिंदी में ई-मेल सुविधाएँ :-**

ई-मेल इंटरनेट के जरिए हम इलेक्ट्रॉनिक मेल ई-मेल परिवार के सदस्यको, दोस्तो को लिखित रूप में भेज सकते है। ई-मेल डाक द्वारा पत्र भेजने के समान है। कैफे हिंदी युनिकोड टॉयपींग स्टूल सॉफ्टवेअर की मदत देवनागरी हिंदी में ई-मेल भेज सकते है। ई-मेल की मदत से हमरा घंटो का काम मिनटों में हो जाता है।

a. www.eparr.com
b. www.mailijol.com
c. www.cdacindi.com
d. www.rediffmail.com
e. www.langoo.com
f. www.gmail.com
g. www.bharatment.com
h. www.webdunia.com

आदि email से आप अपनी जानकारी दूसरों को भेज सकते हैं और दूसरों की भेजी पुस्तक या अन्य जानकारी कुछ क्षण में प्राप्त कर सकते या भेज सकते हैं।

**सर्च इंजिन :-**

गूगल सर्च, गूगल टॉर्च, याहू सर्च, न्यूज स्टॉक और मौसम की खोज, आप इन सर्चिंग साइटो से कोई भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी नेटवर्क के तौर पर हिंदी विश्व की किसी भी समृद्ध भाषा से कम नहीं है। सारा विश्व आज इंटरनेट के कारण नजदीक आ गया हैं। इंटरनेट द्वारा हिंदी का प्रचार-प्रसार सराहनीय प्रयास है। आप एक शब्द गूगल में लिखे और उसके जबाब में आपको ढेर सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। **संदर्भ केंद्र :-** हिंदी के महत्त्वपूर्ण लिंक, हिंदी ई-मेल आवश्यक डाउनलोडस हेतु जाल स्थलों के लिंक आदि अंतरजाल के माध्यम से हम (प्रेमचंद, हरी वंशराय बच्चन गलिब छुटी शराब को पढ़ने के लिए किसी पाठक को उस पुस्तक को खोजकर ढूँढकर, खरीदकर नहीं पढ़ना होगा। अब पाठक इंटरनेट पर निरन्तर www.niratar.org के जरिए मुक्त में विश्व के किसी भी कौने में पढ़ सकता है। इंटरनेट के माध्यम से साहित्य सर्व सुलभ हो गया है।

a. www.cstt.nic.in
b. www.gadner.com
c. www.sahoiyaakademi.org
d. www.unl.igs.uns.edu
e. www.wordanywhere.com
f. www.bharatdarshan.co.in
g. www.rajbhasha.com
h. www.rajbhasha.nic.in
i. www.tdil.mir.gov.in
j. www.indianlanguages.com
k. www.dictionary.com
l. www.cducindi.com
m. www.rosettastone.com

आदि साईटो पर आप राजभाषा हिंदी संबंधि नियम, व्याकरण, साहित्य, पत्रकारिता, हिंदी शिक्षा, सरकारी कार्यालयों की जानकारी, तकनीकी जानकारियाँ, सॉफ्टवेअर ऑनलाईन अनुवाद, सर्च इंजिन, शब्दकोश, समानार्थी शब्द, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, सॉप्टवेअर तकनीकी विकास, लघुकथाएँ हिंदी शब्द, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तके, पुरस्कार, पुरस्कार प्राप्त लेखको के नाम एवं उनकी जानकारी, हिंदी भाषा का इतिहास, हिंदी के गीत एवं कविताओं की जानकारी आदि जानकारी अंतरजाल पर मौजूद है।

**अतिरीक्त उपयोगी कंपोर्नेट :-**

एम.एस.ऑफिस, वर्ड, एक्सेल आदि सभी घटको, विंडो, नोटपैड, विंडो रिजस्ट्री एडिटर, पैंटस, आऊटलुक, एक्सप्रेस आदि को सीधे एक्सेस करने की सुविधा। इस बारे में मनिषा कुलश्रेष्ठ लिखति है, "सूचना प्रौद्योगिकी विभाग, संचार एवं सूचना प्रद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार की भारतीय भाषाओं के लिये प्रौद्योगिकी विकास की वेबसाईट है। हिंदी के साथ-साथ तामिल, उर्दू, तेलगू, पंजाबी, उड़िया, मराठी, कन्नड, मलयालम तथा आसामी भाषाओं से सम्बद्ध संगणक सम्बधित उपकरण मिल जाएँगे। हिंदी कम्युटर के उपकरणों में मुख्य हैं। परिवर्तन डेटा कनर्वटर अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद सहाय सिस्टम, विभिन्न कोड, यूनिकोड सहित वर्तनी, संशोधन, शब्दकोश, शब्द संसाधन, लेख से वाणी सिस्टम, ओसीआर और कुछ चुनी हुई पुस्तकों के डाऊनलोड की सुविधा है।" ९

**गैजेट्स :-**

दैनिक जीवन की जरूरी चीजें जैसे कैलौरी कैलकुलेटर, ऑनलाइन खेल, ऑनलाईन वायु यान, होटल, कार बुकिंग, विकिपीडिया एवं रेल्वे टिकट, रिजर्वेशन की साइट www.iretc.co.in का हिंदी में बीटा वर्णन पेश किया जा चुका है। देश-विदेश के शताधिक ऑनलाईन रेडियो चैनल से प्रसारित है। समाचार के जरीए एक शुध्द हिंदी का प्रचार-प्रसार होता है। बगैर किसी म्यूजिक प्लेयर के संगीत सुन सकते है।

**ब्लॉग्स :-**

हिंदी चिट्ठों के सभी एग्रीगेटर चिट्ठे लिखने के संसाधन सभी चिट्ठों के पते आदि ब्लॉग्स में होते है। ब्लॉग्स के माध्यम से किसी नये विषय की जानकारी पा सकते है। उदा.हिंदी के बडे लेखक,कवि,समीक्षक इनके ब्लॉग्स होते हैं। उन्हेंने लिखे लेख,कविता,समीक्षा कम खर्च में लाखो लोगो तक पहुँच सकते हैं। हिंदी की चर्चित लेखिका डॉ.सुधा ओम ढींगरा इन्होंने अपने ब्लॉग में १२ प्रवासी संकलन अपलोड लिए है।वे अपने ब्लॉग पर ,कहनियाँ,कविता,उपन्यास आदि निरन्तर लिखति है। उनके ब्लॉग के पत्ते http://www.vibhom.com/blogs / http://www.vibhom.com है।

**निष्कर्ष :-**

हंदी कम्प्युटर की दृष्टि से सर्वाधिक अनुकूल भाषा है। जिस प्रकार अग्रेंजी का साहित्य वेब पटल पर उपलब्ध है,उसी प्रकार हिंदी के साहित्य को भी युनिकोड के माध्यम से वेब पटल पर लाने का प्रयास हो रहा है। हिंदी संगणक की दृष्टि से एक उपयोगी एवं सहायक भाषा है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में वेब साहित्य वैश्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**संदर्भ :-**

१. (www.pirobon.org/iis)
२. सी-डैक
३. हिंदी वेब साहित्य - डॉ.सुनीलकुमार लवटे -पृष्ठ ६७-६८
४. मनिषा कुलश्रेष्ठ, नया ज्ञनोदय, मार्च ०८, पृष्ठ ९३-९४
५. नेट पर निजी प्रयासों का महत्त्व - अनूप सेठी, वागार्थ २००४, -पृष्ठ ४८-४९.
६. अंतरिक्ष में डिपार्टमेंटल स्टोर - अनूप सेठी, वागार्थ, फरवरी, २००४, -पृष्ठ ४२
७. हिंदी वेब साहित्य -डॉ.सुनीलकुमार लवटे -पृष्ठ २९७
८. मनीषा कुलश्रेष्ठ नया ज्ञनोदय, मार्च ०८, -पृष्ठ ९३-९४
९. मनीषा कुलश्रेष्ठ नया ज्ञनोदय, मार्च